ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

हिन्दी की प्रारंभिक कहानियों के कथ्य का विवेचनात्मक अध्ययन (स्वतंत्रता, समाज सुधार और देषोदार की भावना का विशेष संदर्भ)

KEY WORDS: इस शोधपत्र के निर्माण हेतु विवेचनात्मक एवं विशलेषनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

स्वर्ण कौर सहायक प्रध्यापक हिन्दी गुरूनानक कॉलेज, श्री मुक्तसर साहिब

ABSTRACT

प्रक्कथनः साहित्य, समाज और संस्कृति का एक दूसरे से गहरा का संबंध है। सामाजिक विकास के साथ–साथ साहित्य का विकास भी होता रहता है। जो समाज, संस्कृति और सभ्यता के विकास में भी सहायक होता है। हिन्दी साहित्य में आदिकाल से आधुनिक काल तक अनेक साहित्यकारों ने साहित्य की रचना की जिसमें समाज में व्याप्त विसंगतियों को चित्रित किया गया, उस विसंगतियों को दूर करने के लिए साहित्य की विविध विद्याओं कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता आदि में आदर्शों की स्थापना करते हुए भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बचाने का प्रयास किया गया। साहित्य के ऊपर पाठक को संस्कारवान बनाने का दायित्व होता है। वह पाठक का मानसिक एवं नैतिक विकास कर उनमें राष्ट्र प्रेम का भाव भर देता है। हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विद्या चाहे वह आदिकाल में लिखी गई हो, भक्तिकाल में, रीतिकाल में अथवा आधुनिक काल में। समाज और संस्कृति के किसी न किसी अनिवार्य पक्ष का चित्रण अवश्य करती है। हिन्दी साहित्य की कहानी विद्या भी इस से अछूती नहीं रह पाई है। हिन्दी कहानी के प्रारंभिक कहानिकारों ने अपनी कहानियों में ऐसे कथ्य को प्रक्ट किया जो भारतीय समाज में आये जागरण से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है। भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना हो जाने से भारत केवल राजनैतिक दृष्टि से ही परतंत्र नहीं हुआ अपितु धार्मिक, सांस्कृतिक, अर्थिक एवं सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। **उपलब्ध सामग्रीः** हिंदी की प्रारंभिक कहानियाँ इंदुमती, एक टोकरी भर मिट्टी, प्लेग की चुड़ैल, ग्यारह वर्ष का समय, पंडित और पंडितानी, कुंभ में छोटी बहू, दुलाई वाली, राखी बंद भाई तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं और शोध गंगा से प्राप्त मार्ग दर्शन ही इस शोधपत्र की आधारशिला बना। **अध्ययन का उद्देश्यः** प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य हिंदी की प्रमुख प्रारंभिक कहानियों के द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को दिखाना, स्वतंत्रता और समाज में मानव जीवन के स्तर को सुधारने की प्रेरणा से है। इन कहानियों में किस प्रकार से भारतीय मानव के जीवन का यथार्थ अंकन किया गया है तथा परम्पराओं की डोर से बंधा व्यक्ति परम्पराओं को निभाने हेतु किय हद तक जा संकता है, इसका सूक्षम अंकन करना ही मेरा उद्देश्य रहा है।

कहानियों की विशलेषण एवं विवेचन

हिंदी की इन प्रारंभिक कहानियों में स्वतंत्रता एवं देशोदार के विषय को उभारा गया है। यदि स्वतंत्रता शब्द के अर्थ के विषय में विचार किया जाए, कि स्वतंत्रता है क्या? तो गहरे अर्थ निकल कर हमारे निकट प्रकट हो जाते हैं। हिंदी मानक कोश के अनुसार ''स्वतंत्रता से अभिप्राय ऐसी स्थिति जिसमें बिना किसी बाहरी दबाव, नियंत्रण या बंधन के स्वयं अपनी इच्छा से सोच समझ कर सब काम करने का अधिकार होता है।''1 किशोरी लाल गोस्वामी की छोटे से कथानक वाली कहानी इंदुमति में भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का चित्रण है। राष्ट्रप्रेम के भावों से ओतप्रोत इस कहानी का केन्द्रबिंदु इंदुमति को बनाया गया है। जिसका पिता इब्राहिम द्वारा पराजित होकर उसे बचपन में ही नगर से दूर एक जंगल में ले आता है। वहां गुप्त रूप से निवास करता है और भारतीय संस्कृति की परम्पराओं के अनुसार अपने शत्रु के वध हेतु प्रण लेता है। चंद्रगृप्त के मुख से उसके हाथों इब्राहिम की मृत्यु का समाचार सुन कर इंदुमति का वृद्ध पिता बहुत प्रसन्न होता है। ''सुनो भाईयो! इतने दिनों पीछे परमेश्वर ने हमारा मनोरथ पूरा कर दिया। जो बात एक प्रकार से अनहोंनी थी सो आप से हो गई।''2 अंत में वह अपने प्रणनुसार इंदुमति का विवाह चंद्रगुप्त के साथ निश्चित कर हिमालय चला जाता है। प्रस्तुत कहानी नायक एवं वृद्ध की भाँति भारतीय नवयुवकों को देशोद्धार के लिए प्रेरित करती है।

कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' में कम से कम शब्दों में कथ्य की मार्मिकता को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। कहानी एक गरीब, बुजुर्ग और दुखी विधवा, जो अपनी झोपड़ी को जमींदार से बचाने हेतु टोकरी में मिट्टी का सहारा लेते हुए, जमींदार को सीख देती है। कि गरीबों के हक को छीनने के पाप का बोझ उठाना बहुत मुश्किल कार्य है। बूढिया उसे कहती है कि महाराज नराज़ न हो, आपसे तो एक टोकरी मिट्टी नहीं उठाई है और इस झोपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं उसका भार आप जन्म भर क्यों कर उठा सकेंगे''। ऐसा सुनकर जमींदार को अपनी गलती का एहसास होता है और वह झोपड़ी वापस विधवा को दे देता है। यह कहानी वैसे तो जमींदार के जुलम की कहानी लगती है, किन्तु असल में एक टोकरी भर मिट्टी के माध्यम से देश की मिट्टी के प्रति प्रेम व्यक्त किया गया है। जमींदारों और सामंतो के शोषण की मुखर अभिव्यक्ति प्रदान की गई है तथा परोक्ष रूप से अंग्रेजी शासन पर व्यंग्य किया गया है।

1902 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी तत्कालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति करती है। भवदेव पाडें के अनुसार इस कहानी में उस वर्तमान को प्रस्तुत किया गया है– "जिसमें प्लेग की चुड़ैल की तरह अंग्रेजी सत्ता ने भारत माता को अधमरा कर दिया था और उसके पुत्र की नियति मे रोने–बिलखने के अलावा कुछ शेष नहीं बचा था।"3 अतः यह कहानी अंग्रेजी शासन की त्रास्द विडंवना से जुड़ी है। समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करती है। कि यदि पति बीमार हो तो, स्त्री उसका कभी भी साथ नहीं छोडती किन्तु पति अपनी पत्नी की लाश को आग देने से भी संकोच करता है। प्लेग की महामारी से त्रस्त जमींदार ठाकुर विभव सिंह अंततः अपनी पत्नी को वहीं कुछ नौकरों के भरोसे छोड़ बेटे को लेकर चले जाते हैं। मृत समझ कर जीवित स्त्री को नौकर और पंड़ित गंगा में प्रवाहित कर देते हैं। होश आने पर जब स्त्री घाट पर पहुँची तो उसे चुडैल समझ कर सभी डरने लगे। कहानी के अंत में जमींदार को हर हाल में पत्नी के साथ रहने का प्रण करता है। जो नारी चेतना का द्योतक है। इसमें प्राण रक्षा के लिए मानवीय मूल्यों से मुक्त होते समाज की वास्तविक छवि प्रस्तुत की गई है, जो कि आज भी प्रासंगिक है। प्रकृति एवं गँगा की महिमा का सजीव वर्णन किया गया है। यह कहानी सामंतवादी हृदयहीनता और भोगवादी पुरोहित संस्कृति का कच्चा चिट्ठा बहुत साफगोई के साथ प्रस्तुत करती है।4

माधवप्रसाद मिश्र की कहानी 'विश्वास का फल' अमीरी–गरीबी के बीच का अंतर और बालक की सहृदयता, भोलापन और निःस्वार्थता को अभिव्यक्त करती है। देश–हित में अपने धन को अर्पित करने की भी बात लेखक कहता है। गरीब बालक भोलेपन में ठाकुर जी को पत्र लिखता है, जो एय्याशी से जीवन जीने वाले प्रतापनारायण को मिलता है। जो अपना धन अभावग्रस्तों के जीवन सुधारने हेतु लगाने को तैयार हो जाते हैं।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की दृष्टि से हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' के कथ्य में ग्यारह वर्षों में हुए परिवर्तन का प्रस्तुतीकरण हुआ है। और उस परिवर्तन से उत्पन्न दुःख से व्यथित बाल–विवाहिता के जीवन के कष्टों को अभिव्यक्ति देती यह कहानी, उसके यौवन की दुर्दशा को चित्रित करती है। जब एक स्त्री किसी कारणवश पति विहिन हो जाती है तो यह समाज की नज़र में अक्षम्य कार्य बन जाता है। बाल विवाह के कोप और भारतीय परम्पराओं के प्रति आस्था को शुक्ल जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है, ''मैं उस समय बालिका थी। विवाह के समय मैने उन्हें देखा था। वह मूर्ति अद्यापि मेरे हृदयमन्दिर में विद्यामान है।''5 खंडहर में गुप्त वास कर रही स्त्री अपने ऐसे स्वामी की याद में, अपने दिन काट रही है जिसे केवल एक दिन ही वह मिली थी। कहानी अपने सुखमय अंत के साथ नारी संघर्ष को प्रोत्साहन देती है।

'पंडित और पंडितानी' एक मनोरंजक एवं व्यंग्यात्मक कहानी है। इसमें 45 वर्षीय पंडितजी और उनकी 20 वर्षीय सुन्दर एवं बुद्धिमान पत्नी के आपसी संवाद एवं तकरार का वर्णन नीहित है। नारी शिक्षा की पक्षधर यह कहानी अखबार में आए विज्ञापन के आधार पर पत्नी अपने पति से तोता देखकर, ले आने का आग्रह करती है, किंतु पंडित कालिदास पर अपने आलेख को लिखने की व्यस्तता और तोते के प्रति उदासीनता है। जिसके कारण दोनों अपने–अपने पक्ष में तर्क सहित उत्तर देते हैं और अंततः पत्नी के सटीक एवं बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर के आगे पति यानी पंडितजी को हथियार डालने पड़ते हैं। तत्कालीन समाज में प्रचलित अनमेल विवाह एवं पुरुष सापेक्ष है और नारी अक्षम इस सोच की ओर भी इशारा किया गया है।

बंग महिला की कहानी 'दुलाई वाली' दो दोस्तों वंशीधर और नवल किशोर के मध्य हास–परिहास पर आधारित है। उसके घर एक साथ जाने के तार पर वंशीधर अपनी पत्नी को कल की बजाय आज ही चलने को तैयार करता है। स्टेशन पर न तो नवल किशोर मिलता है और न ही उसकी पत्नी। वह रेल में सवार होकर वे प्रयाग के लिए निकल पड़ते हैं, किंतु नवलकिशोर 'दुलाई वाली' के माध्यम से मुगलसराय से प्रयाग तक उसे खूब परेशान करता है। कहानी में स्त्री संबंधी मुद्दों को केंद्रीयता प्रदान की गई है। स्त्री समस्याओं यथाः पर्दा प्रथा, अशिक्षा के दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला है। स्वदेशी अंदोलन का समर्थन करते हुए कहानी के अंत में पर्दे के कारण होने वाली समस्याओं को पेश किया गया है।

राखीबंद भाई ऐतिहासिक कथा पर आधारित है। इस कहानी में नागौर और राजपुर के राजाओं मतभेद, गुजरात के धूर्त और पापात्मा ग्यासुद्दीन द्वारा, नागौर के राजा दिलीप सिंह को उसकी बेटी पन्ना अथवा युद्ध में से एक चुनने का प्रस्ताव भेजना और पन्ना द्वारा राजा रूद्रसिंह को राखी भेज कर अपनी रक्षा हेतु आमंत्रित करना आदि प्रमुख घटनाएं हैं। ''शिव! शिव!! इस पवित्र बंधन को कौन तोड़ सकता था। यदि कोई भी स्त्री अपनी रक्षा के लिए किसी सच्चे सामन्त के पास राखी भेजे तो फिर वह निराश न रह सकती।''6 राजपूतों के शौर्य वर्णन में उत्साह का ऐसा प्रचन्ड वेग है कि निर्बल व्यक्ति भी अपनी मात्रभूमि की रक्षा हेतु खड़ग उठा ले। अंत में राजा रूद्रसिंह अपनी प्रेयसी को अपनी राखीबंद बहन के रूप में देख कर आत्म हत्या कर लेता है। राखी के रूप में भारतीय संस्कृति की परम्पराओं पर दृष्टिपात किया गया है।

गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' युद्ध और प्रेम की कहानी हैं। जिसे पढ़ने पर पता चलता है कि सूबेदारनी लहना सिंह को यृद्ध में अपने पुत्र एवं पति की रक्षा करने का अनुरोध करती है। जिसे लहना सिंह मान भी मान लेता है। उनका आपस में कोई

रिश्ता अथवा संबंध भी नहीं। अगर संबंध है भी तो केवल इतना कि वह 23 वर्ष पहले अमृतसर के बाजार में मिले थे और लहना सिंह ने तांगे के नीचे आने से उसकी जान बचाई थी। कहानी अपने संवादों एवं कहानी कला के आधार पर हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जाती है।

कुंभ में छोटी बहू दुखांत शैली की श्रेष्ठ कहानी है। कुंभ में छोटी बहू में चार अलग–अलग प्रसंग हैं और सभी वर्तमान काल मे नियोजित है पहला प्रसंग एक पिछड़े गावं के सुवर्ण मध्यमवर्गीय परिवार के दैनिक जीवन का है; जिसमें उसका समस्त आर्थिक, मूल्यपरक और सांस्कृतिक पक्ष उजागर होता है। दूसरे प्रसंग में रेलवे प्लेटफार्म और रेल के कंपार्टमेंट में मुसाफिरों का दृश्य अपनी पूरी यथार्थता मे उपस्थित होता है। तीसरे प्रसंग में तीर्थराज प्रयाग में कुंभ–स्नान की आपाधापी, भीड़भाड़ और परिणामस्वरूप घटित हादसे का और चौथे प्रसंग में दुर्घटनाग्रस्त स्नानार्थियों के रोने–कलपने, सहायता के लिए गुहार लगाने का करूण दृश्य प्रस्तुत किया गया है। ये चारों प्रसंग समय की रैखिक शृंखला में निबद्ध और एक–दूसरे में अन्तर्भुक्त हैं। इनमें संयोग–तत्व विरल है, और जो है वह संभावना की कोटि से बाहर और जबरदस्ती से लाया हुआ नहीं है।'' 7 धार्मिक परंपराओं के अंधानुकरण के फल को अभिव्यंजित किया गया है। स्त्री–हठ को प्रस्तुत करने के साथ शिक्षा के प्रभाव, रेलगाड़ी और मेले आदि में व्याप्त अव्यवस्थाओं को अभिव्यक्त किया गया है।

निष्कर्ष:

अपने शुरूआती दौर में भले ही कहानियों में मनोरंजन का अधिक्य था किन्तु इनमें समाज सुधार, नारी शिक्षा, शोषण का विरोध का स्वर प्राय सभी कहानियों में मुखरित होता है। इन कहानियों का जन्म भले ही पाश्चात्य साहितय की देखादेखी हुआ किन्तु इनमें हिंदी लेखकों ने अपना मौलिक योग्दान देते हुए समाज एवं संस्कृति के अनिवार्य पक्ष का चित्रण किया। इसके साथ ही अंग्रेजी शासन पर कटाक्ष करते हुए, भारतीय स्वतंत्रता का जयघोष भी किया है। इन कहानियों में स्वतंत्रता की चेतना की मूक स्वर में अभिव्यक्ति मिलती है क्योंकि उस औपनिवेशिक पराधीनता के कारण कई रचनाकारों की रचनाओं को जब्त कर लिया गया। जिसके चलते बाहरी दबाव के कारण रचनाकारों को बार–बार अपनी रचना–प्रक्रिया में बदलाव किया और परोक्ष रूप से देशोदारक कहानियों का लेखन किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,मानक हिंदी कोश, पृ. 240
2. शुरूआती दौर की कहानियां : (भाग एक),टी. के. अग्रवाल,पृ. 14
3. भवदेव पांडेय, हिंदी कहानी का पहला दशक, पृ. 24 वही, पृ. 32
4. शुरूआती दौर की कहानियां : (भाग एक), टी. के. अग्रवाल,पृ. 68 वही, पृ. 103
5. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, पृ. 58